Ebook: Why we can not speak English?

चाहे कॉलेज में जाये और दोस्तों से बात करे, चाहे आप इंटरव्यू देने जाये, अच्छी नौकरी लेना चाहे, चाहे आप इंटरनेशनल बिजनेस करना चाहे या फिर आप किटी पार्टी में अपने दोस्तों से बात करना चाहे | हमें बहुत प्रॉब्लम होती है जब हमें इंग्लिश नहीं आती और हमारे फ्रेंड्स इंग्लिश बोल रहे होते है|

लेकिन सैकड़ो बार ट्राई करने के बाद भी इंग्लिश हमें बोलनी आती क्यों नहीं है ?

इसका जवाब में आपको दूंगा और वो सोल्यूशन भी बताऊंगा जिनकी वजह से आप इंग्लिश बड़ी आसानी से बोलने लगेंगे |

- तो पहला पॉइंट है: सही ट्रेनिंग का चुनाव |

ऐसे ही किसी भी संस्था से इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स मत कीजिये बल्कि लॉजिकल साइक्लोजिकल और स्मार्ट डिसीजन लेते हुए एक ट्रेनिंग कीजिये जिसमे आपको हर उस चीज का पता हो की आपको इंग्लिश ना बोल पाने की प्रॉब्लम्स कौन कौन सी है और उनके सोल्यूसन क्या हो सकते है |

अगर आप वो सोल्यूशन ढूंढ लेगें तो आप इंग्लिश बोलना जल्दी स्टार्ट कर देंगे बशर्ते उन मोटी मोटी किताबो और टेन्स को रटने के ! इसका एक एग्जाम्पल हम लेते है, मान लीजिये आप बीमार हो जाते है और आप डॉक्टर के पास जाते है, लेकिन डॉक्टर ये नहीं पकड़ पा रहा है की आपको जो बीमारी है उसका कारण क्या है? तो अगर डॉक्टर उस बीमारी को समझ नहीं पायेगा और सिर्फ वो आपको रिलीफ की गोलिया दे सकता है लेकिन वो उस बीमारी को दूर नहीं कर सकता ! तो इसी तरीके से अगर आपको ये नहीं पता की इंग्लिश क्यों नहीं बोल पाते तो इस इंग्लिश की बीमारी को दूर नहीं कर पाएंगे !

- 2nd पॉइंट: इंग्लिश ना बोल पाने का सबसे बड़ा रीजन है एन्वायरमेंट !

अगर में आपको कहुँ की आप बिल्ली की आवाज निकालिए तो आप ये काम कर सकते है लेकिन अगर में आपको बोलूँ की हिपोपोटोमस की आवाज निकालिए तो आप नहीं निकाल पाएंगे, जानते है क्यों ? क्योंकि आपने कभी हिपोपोटोमस की आवाज सुनी ही नहीं है, तो जो चीज़ आपके दीमाक में गई ही नहीं है वो कभी जरूरत पड़ने पर बाहर भी नहीं आएगी.

एक दूसरा उदाहरण लेते है की हमारा दीमाक एक घड़े की तरह है जिस घड़े में हम पानी डालते है उस घड़े से हम पानी ही निकालते है, अगर आप उसमे शरबत डालेंगे तो उसमे में से शरबत ही निकालेंगे | तो अगर आप अपने पुरे दिन में हिंदी-हिंदी-हिंदी दीमाक में डाल रहे है तो आप उस घड़े में से यानि अपने दीमाक में से सिर्फ हिंदी ही निकालेंगे |

- इसके बाद है 3rd पॉइंट: बैकअप एन्ड रिस्टोर

ये एक ऐसा पॉइंट है अगर आपको समझ में आगया तो आप 10 दिन में भी इंग्लिश बोल सकते है, जी हाँ मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ अगर भरोसा नहीं है तो गौर कीजियेगा !

एक काम कीजिये की कल आप सुबह से लेकर शाम तक जो भी कुछ बोलते है उसे रिकॉर्ड कीजिए, ऐसा आप क्यों करेंगे? ताकि हमें पता चल सके की हम पुरे दिन में कितनी हिंदी बोलते है? अगर आप पुरे दिन के शब्दों को रिकॉर्ड करके गिनेंगे तो आपको पता चलेगा की हम एक ही वर्ड का इस्तेमाल बार बार करते है और पुरे दिन में 100 -150 शब्दों का ही इस्तेमाल करते है !

इसी तरीके से अगर आप 1 वीक को रिकॉर्ड करेंगे तो भी आपको पता चलेगा की वही-वही शब्द हम बार बार बोलते है चाहे वो हिंदी हो, चाहे वो इंग्लिश हो, हम रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत कम शब्द बोलते है !

तो बैकअप एंड रिस्टोर क्या है ?

आप पूरे दिन के अंदर जो भी शब्द बोलते है उसे अगले दिन लिख लीजिए, जब एक बार आप उन शब्दों को लिख लेते है तो उसके बाद उनकी इंग्लिश डिक्शनरी में देखकर उनके सामने लिख लीजिये और उसे याद कर लीजिये।

तो होगा क्या? आपको ये पता चल चूका है की आप पुरे दिन में कौन-कौनसे शब्द बार-बार इस्तेमाल करते है और अधिकतर शब्द आप लिख चुके है, उनकी इंग्लिश आपको पता है, तो एक बार आपको पुरे दिन के शब्दों की इंग्लिश पता चलने के बाद आप अगले दिन उन शब्दों को बोल सकते है और सभी सेंटेंस हिंदी ही की तरह पुरे दिन इंग्लिश में भी बोल सकते है और ये ट्रिक हमेशा काम करती है !

- 4th पॉइंट: हेजिटेशन

हम सब बोलते है की इंग्लिश बोलते टाइम हमें हैजिटेशन होती है लेकिन एक फैक्ट है की हैजिटेशन का इंग्लिश से कोई लेना देना नहीं है ! जी हां, आप एक बात सोचिये की हम हर नया काम जब भी करते है तो हैजिटेशन होती है इसका इंग्लिश से स्पेशली कोई कॉन्ट्रैक्ट नहीं है !

आप पहली बार काम करेंगे तो आपको हैजिटेशन होगी लेकिन आप क्या कर सकते है की आप उस काम को धीरे-धीरे लगातार प्रतिदिन स्टेप बाए स्टेप करना स्टार्ट कीजिये ! पहले दिन आप थोड़ा करते है उसके बाद आप ज्यादा करते है फिर और ज्यादा करते है जब आप किसी चीज की प्रैक्टिस करते है तो उसके बाद में वही चीज आसान हो जाती है जो की आपको स्टार्टिंग में बहुत ज्यादा हैजिटेटेड लगती है !

- 5th पॉइंट: ओवरव्हेल्मिंग

ये ज्यादातर लोग सोचते है की बहुत ज्यादा पड़ने से हम इंग्लिश बोलना सीख जायेगे और वो बड़ी-बड़ी किताबे लाकर पड़ना स्टार्ट कर देते है, हर रोज हजारो वीडियो देखते है, लेकिन ऐसा करने से हमारा दीमाक ओवरव्हेलम हो जाता है, इसका मीनिंग ये है की हमारे दिमाक में खिचड़ी बन जाती है और हमें कुछ भी समझ में नहीं आता है !

तो इससे अच्छा है की जैसे मैंने पिछले पॉइंट में बताया, आप चीजों को टुकड़ो में बाटकर और एक बड़े लक्ष्य को छोटे-छोटे टारगेट में बाटकर, आप रोज़ाना 5 मिनिग्स, 5 सेंटेंस तैयार करना स्टार्ट कीजिये, आप एक दिन में एक ही प्रॉब्लम का सोल्यूसन निकालिये, इस तरीके से जब आप पढ़ते है तो आप ज्यादा जल्दी मंजिल तक पहुंचते है लेकिन अगर आपने सोचा की बहुत तेज़ ये काम कर लू तो आप फेल हो जायेगे,

हम यहाँ पर एक उदाहरण लेते है, अगर आप मैराथन की रेस दौड़ना चाहते हो तो आप स्टार्टिंग में स्लो चलेंगे लेकिन अगर आप 100 मीटर रेस दौड़ना चाहते है तो आप बहुत फ़ास्ट दोड़ेगे, यह परी इंग्लिश हमारे लिए मैराथन है और अगर हमें मैराथन जितना है तो हमें स्टार्टिंग में बहुत स्लो, स्टेप बाय स्टेप आगे बढ़ना पड़ेगा और हम मैराथन में कामयाब हो जायेगे !

- 6th पॉइंट है: मोटिवेशन

क्योकि जब भी हम कोई हार्ड वर्क करते है तो हम बार-बार डिमोटिवेट (हताश) हो जाते हैं और डिमोटिवेट होने की वजह से हम उस काम को बीच में ही छोड़ देते है, तो हम ऐसा क्या करे की हम हताश होकर इंग्लिश स्पीकिंग को बीच में न छोड़े? इसके मैं आपको दो तरीके बताता हूँ !

पहला आप फीयर (डर) को याद करे और दूसरा अपने डिजायर (इच्छा) को, इसका मतलब ये है की जब भी आप डिमोटिवेट होने लगे तो आप सोचिये की अगर मैंने इंग्लिश बोलनी नहीं सीखी तो मुझे कितने नुकसान होंगे? मेरी कितनी बार बेइज्जती होगी? मुझे कितनी बार शर्मिंदा होना पड़ेगा? और फिर आप अपने आपको दुबारा से मोटिवेट कर सकते है !

इसी तरीके से आप अपने डिजायर को भी सोच सकते है, इसका मतलब है की आप सोचिये अगर आप इंग्लिश बोलते है तो 50000 की या 1 लाख की सैलरी ले सकते है, आप अच्छी जॉब कर सकते है, आप विदेश में पढ़ाई कर सकते है, आप इंटरनेशनल व्यवसाय कर सकते है, आप अपना कोई भी डिजायर अपने दीमाक में बनाइये जिससे आप मोटिवेट होते रहेंगे और लगातार उस काम में तब तक लगे रहेंगे जब तक की आप कामयाब नहीं हो जाते है !

- 7th पॉइंट है: प्रैक्टिस फॉर कॉन्फिडेंस

दोस्तों हेजिटेशन का अपोजिट कॉन्फिडेंस होता है, तो अगर आप हेजिटेटेड होते है तो उसका कारण होता है की आप प्रैक्टिश नहीं कर रहे है ! अगर आप किसी काम की प्रैक्टिश बार-बार करते है तो आपका कॉन्फिडेंस (आत्मविश्वास) बढ़ता है और आप उस काम को बड़ी आसानी से कर लेते है !

जरा सोचिये अगर आपको आपके कॉलेज में 1 स्पीच देना है और आपने उस स्पीच की कोई तैयारी नहीं की है, आपने एक बार भी उसे अपने घर पर ट्राई करके नहीं देखा है तो होगा क्या, जब स्पीच के लिए आपकी बारी आने वाली होगी तो तितलियाँ आपके पेट में दौड़ रही होगी ! क्यों? क्योकि आप हजिटेटेड हो रहे है और वो इसलिए की आपके दीमाक में डर बैठा हुआ है की मैंने तैयारी नहीं की है,

लेकिन अगर उसी चीज को उसी स्पीच को आप 10 बार ट्राई कर चुके है, अपने दोस्त के सामने, पैरेन्ट्स के सामने, अपने ब्रॉदर के सामने या कही पर भी, चाहें आईने के सामने अगर आप उसको ट्राई कर चुके है तो आप इस चीज से कॉन्फिडेंट रहेंगे की ये काम मुझे 100% आता है और मै इस काम को 100% कॉन्फिडेंस से कर सकता हूँ |

- 8th पॉइंट है: रिव्यू बुक

अगर आप एक रिव्यू बुक बना लेते हो तो आपकी वैकबलरी की समस्या 100% ख़त्म हो जाएगी ! रिव्यू बुक आखिर होती क्या है? आप साधारण रजिस्टर या डायरी लीजिये जिसके अंदर आपको करना क्या है की आप किसी भी एक बुक में से कोई एक पेज पढ़ना स्टार्ट कीजिये जो की इंग्लिश मे हो, आप उसकी जब पहली लाइन पढ़ेगे तो आपको 4-5 वर्ड जो की इंग्लिश में है उनकी हिंदी नहीं पता होगी, जब आप ऐसा करेंगे तो जिन शब्दों की हिंदी आपको नहीं पता होता है उसे रिव्यू बुक में लिखते जाइये और हर रोज शाम को उस डायरी में उनकी इंग्लिश, डिक्शनरी में से देखकर लिखते जाइये, ऐसा करने से होगा क्या की आप उस डायरी में लिखे हर उस वर्ड को समझ पाएंगे जो आपको नहीं आते है, इसके बाद में आप उनको याद करते जाइये और अगले दिन उसी बुक में उसी लाइन को पढ़ेंगे तो आपको वो लाइन 100% समझ में आएगी !

इसी तरीके से लाइन बाय लाइन, पेज बाय पेज, आप उस पूरी बुक को कम्प्लीट करते है और जब आपको पूरी बुक की हिंदी समझ में आ जाती है तो आप एक न्यू बुक उठा लेते है ! नेक्स्ट टाइम एक सरप्राइज आपको मिलेगा की जब आप बिलकुल नई बुक उठाएंगे तो उस टाइम आपको एक लाइन में 3 वर्ड्स की बजाय पुरे पेज में सिर्फ 2 वर्ड्स ऐसे होंगे जो आपको समझ नहीं आएंगे और ये कमाल है रिव्यू बुक का ! अगर आप ऐसा 5 बुक तक करते हो तो 6th बुक में आपको 5-10 पेज के बाद में कोई एक ऐसा वर्ड मिलेगा जो आपको समझ नहीं आता है और इसे कहते है इन्वायरमेंट बिल्डअप,!अगर आप इस तरीके से अपने दिमाक में इंग्लिश डालते रहेंगे, लगातार मोटिवेटेड होते रहेंगे तो आपको इंग्लिश बोलने से कोई नहीं रोक सकता !

- आखिरी 9th पॉइंट है: फोकस

अगर आप सिर्फ टाइम पास के लिए इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स करना चाहते है या ट्रैनिंन चाहते हो तो आप ये नहीं कर पाओगे ! क्योकि फोकस एक ऐसी चीज है जो आपको हार्ड वर्क से कामयाब बना सकती है लेकिन बिना फोकस के आसान से आसान काम भी आपके लिए इम्पॉसिबल बन जाता है !

फोकस का बड़ा इम्पैक्ट होता है, जब आप लैंस से कुछ किरणों को एक कागज पर डालते है तो वो जलने लगता है लेकिन वही कागज उसी जगह पर धुप में 10 दिन से पड़ा होने पर भी नहीं जल पाता है, तो इसका मतलब है जब हम अपना माइंड और बॉडी एक जगह पर कॉन्सेंट्रेट या फोकस करते है तो वो काम इम्पॉसिबल से पॉसिबल हो जाता है और जब आप लगातार इस काम को स्टेप बाय स्टेप, फोकस्ड होकर करते है तो दुनिया में कोई भी काम ऐसा नहीं जो आप नहीं कर सकते !

तो दोस्तों अगर इस अकेले फ्री चैप्टर में मैं आपको इतना कुछ सिखा सकता हूँ तो सोचिये 3 महीने में क्या कुछ नहीं सीखा जा सकता, जी हाँ, आप Englishbolega.com पर मुझसे फुल ट्रेनिंग ले सकते है जो इतनी स्मार्ट, लॉजिकल और प्रोफेशनल ट्रेनिंग है की आपको इंग्लिश बोलने से कोई नहीं रोक सकता और हाँ, अगर आप Englishbolega.com से कम्प्लीट इंग्लिश स्पीकिंग ट्रेनिंग करते है तो मेरे पास आपके लिये एक गिफ्ट भी है !

आप पेमेंट करते टाइम प्रोमो कोड RAVIVIDEO डालिये और 30% स्पेशल डिस्काउंट पाइये ! तो अभी जाइये Englishbolega.com पर, फिर मिलते है फुल क्लास में. See you.